जीवन सौरभ

Shivmani Geriatric Home

A Unit of Global Hospital & Research Centre

Jan - Mar 2023

Volume 32

अंदर देखिए

बेहद का दृष्टिकोण ... 1
कर्मो का लेख ... 2
अनुपम दृश्यावली ... 4
गणतंत्र दिवस ...10
87वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती उत्सव ... 10
दिव्य दर्पण ... 11

बेहद का दृष्टिकोण

अक्सर हम सभी को यह सिखाया गया है कि हमारा व्यवहार ही सब कुछ है। जरा रुक कर स्वयं को चेक करना चाहिए कि अभी हाल ही में हमारा दृष्टिकोण कैसा रहा है? क्या हम स्वयं को आशावादी, निडर या असंतुष्ट महसूस करते हैं? क्या हमारे दृष्टिकोण ने हमको दुनिया को हर समय एक सकारात्मक लेंस के माध्यम से देखने में मदद की है या केवल तभी जब परिस्थितियाँ हमारे लिए सही हों, केवल तब ही हमारा दृष्टिकोण सकारात्मक होता है? हमारा दृष्टिकोण ही हर स्थिति में विकास और सीखने के द्वार खोलता या बंद करता है। क्योंकि हमारे द्वारा रचित हर विचार के साथ एक भावना होती है। समय के साथ हमारी भावनाएं हमारे दृष्टिकोण को लोगों, परिस्थितियों, काम और दुनिया

के बारे में विकसित करती हैं इसलिए किसी व्यक्ति या स्थिति के बारे में हमारी भावनाओं के आधार पर हम उनके प्रति एक दृष्टिकोण विकसित करते हैं जो स्वीकृति, प्रतिरोध, सम्मान या उदासीनता का हो सकता है। हमारे विचार ही हमारे दृष्टिकोण का निर्माण करते हैं, इसलिए हमारे पास अपने विचारों के क्रम को बदलकर अपने दृष्टिकोण को बदलने की शक्ति है। यहां तक कि जीवन में हमारे पास सब कुछ पर्याप्त है या कुछ कमी है, यह लगभग हमेशा हमारे दृष्टिकोण के बारे में होता है, इस बारे में नहीं कि हमारे पास वास्तव में कितना है। एक अच्छे जीवन के लिए केवल एक सही दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

ऐसा भी हो सकता है कि आज सुबह कोई चुनौतीपूर्ण समस्या हमारे सामने आई हो जिसके कारण शायद हमारे सकारात्मक दृष्टिकोण में गिरावट आई हो, तो क्या हम उस बुरे अनुभव को पूरे दिन के हर क्षण को प्रभावित करने दे रहे हैं? या हम स्वयं के दृष्टिकोण को आत्मसात करने के लिए कुछ क्षण रुककर स्वयं को जांच करते हैं? अक्सर हम लोगों, स्थितियों, वस्तुओं, प्रकृति और खुद दुनिया से संतुष्ट नहीं होते हैं। हम शिकायत करते हैं कि हमारे पास क्या कमी है जैसे स्वास्थ्य, खुशी, आराम, समय, धन, रिश्ते आदि, इनकी सूची लंबी हो सकती है। सच्चाई यह है कि यदि हम एक अलग परिणाम चाहते हैं तो हमें पहले अपने दृष्टिकोण को हद की मानसिकता से बेहद की मानसिकता में बदलने की आवश्यकता है। एक सकारात्मक दृष्टिकोण जीवन के पूरे पाठ्यक्रम को

विश्व कल्याणकारी वह है जो प्रकृति सहित हर आत्मा के प्रति शुभ भावना रखते हैं।

नियंत्रण में लाता है। यह स्वास्थ्य, खुशी, रिश्तों और सफलता में सुधार करता है। यहां तक कि अगर चीजें हमारे पक्ष में नहीं हैं, तो हमारा दृष्टिकोण ही यह तय करता है कि क्या हम इसे सीखने और बढ़ने का अवसर मानते हैं या इसे असफलता के रूप में देखते हैं और पीछे हटते हैं। हर दिन हमें अपने दृष्टिकोण पर चिंतन करना चाहिए और अपनी बेहद की मानसिकता की जिम्मेदारी लेते हुए इसे सकारात्मक रखना चाहिए। साथ ही यह देखते रहना चाहिए कि परिस्थितियां हमारे नियंत्रण में कैसे आती हैं। अपने आप को याद दिलाते रहना चाहिए कि मैं बेहद का दृष्टिकोण रखता हूं। मेरे पास वह सब कुछ है जो मुझे चाहिए। मेरा नजरिया ही जीवन में सही लोगों और स्थितियों को आकर्षित करता है, क्योंकि इस तरह से हम अपने बेहद व विशालता के दृष्टिकोण से अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं।

बी.के. ओम भाई
प्रोजेक्ट मैनेजर
शिवमणि होम

कर्मों का लेख

मनुष्य जैसा कर्म करता है वैसा ही फल भोगता है। वस्तुत: मनुष्य के द्वारा किया गया कर्म ही प्रारब्ध बनता है। इसे यूं समझें कि किसान जो बीज खेत में बोता है, उसे ही फसल के रूप में वह बाद में काटता है।
कर्म का फल निश्चित रूप से मिलता ही है किंतु वह फलेगा या नहीं शुभ फल देगा या नहीं, कर्ता के लिए लाभदायक होगा या हानिकारक होगा, यह कर्ता पर ही निर्भर होता है कि उसका मनोभाव कैसा है| कर्म के फल का सिद्धांत है- 'यथा बीज तथा निष्पत्ति:' अर्थात 'जैसा बीज वैसा फल', 'जैसा किया हुआ कर्म वैसा ही उसका भोग।'

एक बार की बात है, एक राजकुमार किसी जंगल में शिकार के लिए गए थे| तभी अचानक किसी शिकारी ने तीर छोड़ा, वह राजकुमार के मस्तिष्क पर जा लगा। राजकुमार वही धराशाई हो गए। समस्त राज्य अपने राजकुमार की याद में रो पड़ा। दाह संस्कार संपन्न हुआ।
पुत्र शोक अब प्रतिशोध की ज्वाला में भड़क उठा और महाराज ने कारागृह से बंदी शिकारी को उपस्थित करने का आदेश दिया।
शिकारी लाया गया। महाराज ने तड़पते हुए पूछा- दुष्ट शिकारी! तूने राजकुमार का वध किया है, बोल तुझे मृत्युदंड क्यों न दिया जाए ?

शिकारी ने एक बार सभा भवन में बैठे हर व्यक्ति पर दृष्टि दौड़ाई। फिर राजपुरोहित पर एक क्षण को उसकी दृष्टि ठहर गई। उसे कुछ याद आया, शिकारी ने कहा -"महाराज मेरा इसमें क्या दोष? मृत्यु ने राजकुमार को मारने का निश्चय किया था, मुझे माध्यम बनाया, मेरी बुद्धि भ्रमित की, और मैंने राजकुमार को कस्तूरी मृग समझकर तीर छोड़ दिया! जो दंड आप मुझे देना चाहते हैं, वही मृत्यु को दें। चाहे तो राजपुरोहित से पूछ ले! यह भी तो कहते हैं कि विधाता ने जितनी आयु लिख दी, उसे कोई घटा या बढ़ा नहीं सकता। घटनाएं तो मृत्यु के लिए मात्र माध्यम होती हैं।"

महाराज का क्रोध विस्मय में बदल गया। उन्होंने राजपुरोहित की ओर दृष्टि डाली तो लगा, कि सचमुच वे भी शिकारी का मूक समर्थन कर रहे हैं।

उन्होंने मृत्यु का आव्हान किया, मृत्यु उपस्थित हुई। महाराज ने उससे पूछा-" आपने राजकुमार को मारने का विधान क्यों रचा?"

"उनका काल आ गया था! मृत्यु बोली।"

तो फिर काल को बुलाया गया।

काल ने कहा,- "मैं क्या कर सकता था महामहिम ! राजकुमार के कर्मों का दोष था। कर्मफल से कोई बच नहीं सकता। राजकुमार ही उसके अपवाद कैसे हो सकते थे ?"

कर्म की पुकार की गई।

उसने उपस्थित होकर कहा -"आर्य श्रेष्ठ!अच्छा हूँ या बुरा, मैं तो जड़ हूं। मुझे तो आत्म चेतना चलाती है, उसकी इच्छा ही मेरा अस्तित्व है । आप राजकुमार की आत्मा को ही बुला कर पूछ लें, उन्होंने मुझे क्रियान्वित ही क्यों किया? "

और अंत में राजकुमार की आत्मा बुलाई गई ।दंड नायक ने प्रश्न किया-भन्ते! तुम कर्ता की स्थिति में थे, क्या यह सच है कि तुमने कोई ऐसा कार्य किया, जिसके फलस्वरूप तुम्हें अकाल, काल- ग्रसित होना पड़ा ?

शरीर के बंधन से मुक्त, आकाश में स्थिर, राजकुमार की आत्मा थोड़ा मुस्कुराई ! फिर गंभीर होकर बोली - "राजन! पूर्व जन्म में, मैंने इसी स्थान पर मांस भक्षण की इच्छा से एक मृग का वध किया था। मृग में मरते समय प्रतिशोध का भाव था, उसी भाव ने व्याध को भ्रमित किया, इसीलिए व्याध का कोई दोष नहीं, ना मुझे काल ने मारा है। मनुष्य के कर्म ही उसे मारते और जलाते हैं, इसीलिए आप मेरी चिंता छोडो, कर्म की गति बड़ी गहन है। अपने कर्मों का हिसाब करो। भावी जीवन की प्रगति और उससे स्वर्ग मुक्ति, सब कर्म की गति पर ही आधारित है। इसीलिए तात! आप भी अपने कर्म सुधारो।

परमपिता परमात्मा स्वयं कहते हैं कि कोई भी मनुष्य क्षण भर भी कर्म किए बगैर नहीं रह सकता है। इसीलिए कहा गया है 'कर्म फले तो सब फले' इस सूक्ति का भाव है किसी कर्म व बात का शुभ परिणाम प्रकट होगा तो उससे संबंधित सभी लोग लाभान्वित होंगे| यदि हमारे कर्म उपयोगी और लाभदायक सिद्ध होंगे तो उससे सभी मनोरथ सफल होंगे, हमारे कर्म सार्थक होंगे और हमारा भाग्य भी श्रेष्ठ बनता जाएगा| अतः कर्मों की गुणवत्ता पर अटेंशन देना आवश्यक है।

बी.के. विजय बहन
डिप्टी मैनेजर
शिवमणि होम

अनुपम दृश्यावली

11 मार्च, शिवमणि होम के निवासियों के द्वारा सर्वप्रिया, शिवप्रिया, तपस्वीमूर्त, सादगी, सरलता व गंभीरता की प्रतिमूर्ति, आदरणीया दादी गुलजार जी के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि...

दादी गुलजार सदैव सूर्य बन प्रवाहित करती थी दिव्य ऊर्जा,
स्वयं परमपिता ने दिया दादी जी को भाग्यशाली रथ का दर्जा,
दादी जी ने हर मन व हर दिल में लहराया शिव ध्वजा,
निमित्त, निर्माण, निर्मल सी, बनी शिव की शैलजा।

अनुपम दृश्यावली

27 मार्च, सर्व ब्राह्मण दिलों की जान व तपस्वीमूर्त आदरणीया दादी जानकी जी के प्रति शिवमणि होम निवासियों के द्वारा स्नेहांजलि...
एक ही लक्ष्य व एकव्रता बन फैलाया एक का ही आफताब,
एकनामी व इकानामी का अवतार बन मिटाया माया का बाहरी नकाब,
पास विद ऑनर हो बाबा की जनक बनी ऐसा रतन नायाब,
ऐसे स्वराज्यअधिकारी को करती प्रकृति व माया भी आदाब|

अनुपम दृश्यावली

13 जनवरी, सभी शिवमणि होम निवासी लोहड़ी एवं मकर सक्रांति के पर्व को उमंग उत्साह से मनाते हुए...

30 जनवरी, सभी शिवमणि होम निवासी रचनात्मक वर्कशॉप एवं खेलपाल का आनंद लेते हुए..

अनुपम दृश्यावली

शिवमणि होम के बी.के. मनोज भाईजी ने गांधीनगर, सेक्टर 27, वावोल, अंबाजी मंदिर, जालोतरा, वानसोल, कुंदेल आदि स्थानों के भाई बहनों से स्नेहमिलन किया तथा भट्टी व क्लास कराया|

अनुपम दृश्यावली

14 फरवरी को आमथला ग्राम में स्थित गीता पाठशाला में शिव जयंती के शुभ अवसर पर शिव ध्वजारोहण किया गया, जिसमें सभी शिवमणि होम निवासी भी सम्मिलित हुए|

16 फरवरी को जल मंत्री भ्राता श्री गजेंद्र सिंह शेखावत जी ने शिवमणि होम का अवलोकन किया तथा प्रशासन संबंधी जानकारी प्राप्त की|

अनुपम दृश्यावली

8 मार्च, विश्व महिला दिवस पर विशेष सत्र का आयोजन किया गया जिसमें वरिष्ठ भाई बहनों ने अपने-अपने विचार कविता एवं भाषण के रूप में व्यक्त किये तथा महिलाओं के अध्यात्मिक सशक्तिकरण पर विशेष ध्यान केंद्रित कराया|

10 मार्च, अलौकिकता के साथ रूहानी होली मनाते शिवमणि होम निवासी...

अनुपम दृश्यावली

26 मार्च को न्यूयॉर्क से वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका आदरणीया बी.के. मोहिनी दीदी जी ने सभी शिवमणि होम निवासियों से स्नेह मिलन किया। उन्होंने बताया कि वैराग्य और रुचि दोनों ही आवश्यक है यदि रुचि समाप्त हो जाए तो वृद्धावस्था जल्दी आने लगती है इसीलिए यह अत्यंत आवश्यक है कि हम कुछ ना कुछ कार्य करने में व्यस्त रहें, मन को कुछ होमवर्क दे दें ताकि व्यर्थ संकल्प में समय समाप्त ना हो जाए। इस प्रकार अपने अनुभवों से सभी को लाभान्वित किया।

गणतंत्र दिवस

26 जनवरी, 74 वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर शिवमणि होम के प्रांगण में अत्यंत उमंग उत्साह के साथ, शांतिवन से वरिष्ठ राजयोगी शिक्षिका बी.के. गीता दीदी जी की उपस्थिति में, सभी शिवमणि होम निवासियों के द्वारा तिरंगा झंडा फहराया गया। देशभक्ति से ओत-प्रोत कविताओं एवं गीतों के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को भावांजलि अर्पित की गई।

बी.के. गीता दीदी जी ने अपने आशीर्वचन में कहा कि आज का यह दिन ऐतिहासिक गौरव भरा दिन है। सभी में उमंग उत्साह की लहरें भी दिखाई दे रही हैं। हम अत्यंत भाग्यशाली हैं क्योंकि भारतवर्ष में विभिन्न प्रकार के धर्म, जाति, भाषाएं व मान्यताएं हैं फिर भी हम आपस में मिलजुल कर एक दूसरे का सहयोग करते हैं, एक दूसरे को सम्मान देते हैं तथा किसी भी देश के विकास के लिए यह बहुत जरूरी है कि उस देश के नागरिक आपस में मिलजुल कर रहें। आज के समय अनुसार विश्व की आत्माओं को खुशी, शक्ति और स्नेह की आवश्यकता है तो अवश्य ही हम परमात्म स्नेह का वास्तविक झंडा दिल में लहराएंगे।

इस प्रकार राष्ट्रीय उत्सव पर अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की।

साथ ही शिवमणि होम के प्रोजेक्ट मैनेजर बी.के. ओम भाई ने भी अपनी शुभकामनाएं व्यक्त करते हुए कहा कि हम परमात्मा की रूहानी मिलिट्री हैं अतः जो भी संविधान अथवा नियम मर्यादायें हैं, उन्हें जीवन में धारण करते आगे से आगे कदम बढ़ाते जाना है, उन्नति को प्राप्त करते जाना है। उमंग उत्साह के साथ परमात्म-याद से कार्यक्रम संपन्न हुआ।

87वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती उत्सव

22 फरवरी को शिवमणि होम के प्रांगण में शिव जयंती महोत्सव अत्यंत उमंग उत्साह से मनाया गया, जिसमें ग्लोबल हॉस्पिटल के डायरेक्टर आदरणीय डॉ प्रताप मिड्ढा जी एवं शांतिवन से वरिष्ठ राजयोगी बी. के. करुणा भाई जी उपस्थित रहे। इन सभी मेहमानों एवं शिवमणि होम के सभी सीनियर सिटीजंस की उपस्थिति में शिव ध्वजारोहण किया गया। शिवमणि होम के प्रोजेक्ट मैनेजर बी.के. ओम भाई जी ने सभी का शब्दों द्वारा स्वागत किया|

तत्पश्चात सभी अतिथियों ने शिव जयंती के उपलक्ष्य में अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की तथा सीनियर सिटीजंस एवं सेवाधारियों के द्वारा गीत, कविता एवं नृत्य नाटिका प्रस्तुत की गई, जिस ने सभी का मन मोह लिया। तत्पश्चात परमपिता परमात्मा शिव की याद में दीप प्रज्वलन कर केक भी काटा गया। शिवमणि होम की डिप्टी मैनेजर बी.के. विजय बहन ने सभी का आभार व्यक्त किया तथा उमंग उत्साह के साथ परमात्म-याद से कार्यक्रम संपन्न हुआ।

दिव्य दर्पण

जिस तरह से भटकते हुए पथिक को सही और सच्चा रास्ता मिल जाता है, उसी प्रकार से मुझ जैसे भटकते पथिक को परमात्मा का सत्य परिचय मिल गया। बचपन से ही परमात्मा को ढूंढने की चाह रही और शिवजी बाल्यकाल से ही मेरे आराध्य रहे। परमात्मा के प्रति मेरा जो विश्वास था वह 1982 में फलीभूत हुआ और कर्नाटक के बेंगलुरु सेंटर में 7 दिन का कोर्स करने के साथ दादी हृदय पुष्पा जी से भी पालना लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। 7 दिन का कोर्स किया तो मुझे परमात्मा पर पूरा निश्चय हो गया और मेरे बोल-चाल, रहन-सहन, चाल-चलन खान-पान सब में परिवर्तन आ गया। परमात्मा ने मुझ पत्थर को तराश कर हीरे जैसा बना दिया| कई पारिवारिक समस्याओं का भी मन के शक्तिशाली होने के कारण निवारण हो गया। उसके पश्चात 1982 से ही होसुर सेंटर में प्रतिदिन मुरली क्लास एवं राजयोग की जीवन शैली प्रारंभ हो गई| होसुर, कर्नाटक में हमारी शासकीय सेवा स्टेट गवर्नमेंट के एजुकेशन डिपार्टमेंट में हेड मास्टर की थी| तत्पश्चात एजुकेशनल ऑफिसर के रूप में भी अपनी सेवाएं दी| बाहर की दुनिया में भी रहते ईश्वरीय मर्यादाओं एवं नियमों का दृढ़ता से पालन करने लगा|

बाबा के सामने एक संकल्प रखा कि बस बाबा अब मुझे मधुबन में ही रहना है और बाबा ने वह संकल्प भी पूर्ण कर दिया और मुझे शिवमणि होम में रहने का सुनहरा अवसर मिला एवं हम शिवमणि होम निवासी बन गए। कई परिस्थितियां भी आईं लेकिन जब सर्वशक्तिमान परमात्मा साथ है तो हर असंभव कार्य भी संभव होता गया। बाबा ने मुझे एकनामी और इकोनामी का जैसे अवतार बना दिया। अब मेरे मन में

कुछ भी आश नहीं है, क्योंकि बाबा ने कहा है खाली हाथ आए थे और खाली हाथ जाना है। यहां का बैंक-बैलेंस, गाड़ी-बंगला, महल-माड़ियां कुछ साथ चलने वाला नहीं है। हमारे साथ चलेंगे तो हमारे पुण्य कर्म एवं दुआओं का खाता। बाबा ने अभी ही मुझे बेगर टु प्रिंस बनने का पूर्ण निश्चय करा दिया। यहां तो ऐसा अनुभव होता है जैसे कि मैं परमात्म छत्रछाया में हर पल हूं और यहां का वातावरण भी अत्यंत शांतिपूर्ण है। मैं बापदादा को बहुत-बहुत दिल से धन्यवाद देता रहता हूं कि आपने मुझे अपनी गोद में बिठा लिया है अब पुरानी दुख दर्द की दुनिया से नाता पूरी तरह टूट चुका है तथा नई दुनिया अब बिल्कुल सम्मुख ही अनुभव होती है। दिल हर पल गाता रहता है वाह बाबा वाह, तेरा लाख-लाख शुक्रिया।

बी.के. सत्यनारायण
शिवमणि होम

मन जितना शून्य होगा
जीवन उतना ही
कीमती लगेगा।

भावभीनी श्रद्धांजलि

शिवमणि होम निवासी बी.के. सुलोचना तुपे माता ने 18 जनवरी को भौतिक देह को त्याग बापदादा की गोद ली। हम सभी शिवमणि होम निवासी उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

SHIVMANI GERIATRIC HOME
(Project of Global Hospital & Research Centre)
Near Global Hospital Trauma Centre
Taleti, Abu Road, Dist Sirohi
Rajasthan (India) - 307 510
9414092383; 9413372922 (Mobile)
9414037045; 9875050933 (Manager)
E-mail : shivmani.opk@gmail.com
Website : www.shivmani.org

Feedback

Valuable feedback and information may be emailed at
shivmanihome@gmail.com